शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 313-321
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. संजय कुमार सिंह
शोधकर्ता, द आई.सी.एफ.ए.आई. विश्वविद्यालय, रायपुर.

2. डॉ. जया सिंह
शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष - हिन्दी विभाग, द आई.सी.एफ.ए.आई. विश्वविद्यालय, रायपुर.

Corresponding Author :

संजय कुमार सिंह
शोधकर्ता, द आई.सी.एफ.ए.आई. विश्वविद्यालय, रायपुर.

कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा की भूमिका : एक अध्ययन

शोधसार : कमलेश्वर नई कहानी कथा सार के सम्राट थे जिनकी रचनाओं में सामाजिक व्यक्तित्व निखार आता है साथ ही और आर्थिक व्यवस्थाओं का भी सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होती है साथ ही सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवदेनाऐं तथा सांस्कृतिक चेतना को का स्वरुप का सशक्त चित्रण देखने को मिलता है प्रस्तुत अध्ययन के उददेश्य उनकी कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा के तत्वों जैसे नैतिक मूल्य, लोक संस्कृति, धर्म, कर्तव्य बोध, सह अस्तित्व तथा मानवीय व्करण की पहचान और विश्लेषण करना है। इनकी शोध के माध्यम से ज्ञान परम्परा के साथ ही सामाजिक व सांस्कृतिक कर्तव्य बोध का भी रुपान्तरण देखने को मिलता है। इसमें यह मानवीय सोच के ऊपर उठकर अपनी कला के माध्यम से भारतीयता का बोध कराते हैं।

इस शोध में गुणात्मक एवं पाठ विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है चयनित कहानियों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि कमलेश्वर आधुनिक भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ-साथ सकारात्मक मूल्यों पर भी जोर देते है आधुनिक संदर्भ में पुर्न परिभाषित करते हैं। उनकी कहानियों में परम्परा और आधुनिकता के बीच संवाद, संघर्ष और समन्व की प्रक्रिया दिखाई देते है उनकी कहानियों में ग्रामीण परिवेश में उन्होने भारतीय ज्ञान परम्परा का सम्पूर्ण चित्रण देखने को मिलता है एवं आधुनिक विचार धारा के माध्यम से भी उन्होने अपनी कहानियों में सम्पूर्ण भारतीय परम्परा का व्याख्यान किया है जिससे समस्त मानव का कल्याण हो सके उन्होने ग्रामीण व आधुनिक दोनों परम्पराओं में सामजस्य बैठाऐ रखा है जिससे समस्त मानव जाति में भारतीय ज्ञान परम्परा बहती है तथा सम्पूर्ण समाज एकरुपता दिखई दे।

अध्ययन के स्वरुप में यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय परम्परा को जात व प्रासगिक रुपों मे प्रस्तुत करती है तथा समकालीन समाज में मानवीय मूल्यों की पुर्न स्थापना का संदेश देती है इस प्रकार उनका कथा साहित्य भारतीय सांस्कृतिक

चेतना और आधुनिक सामाजिक यथार्थ के बीच एक सेतु का कार्य करता है। इनकी कहानियों के माध्यम से समाज में हो रहे विभिन्न कुरुतियों के साथ सामाजिक शोषण तथा अज्ञानता को भी दूर करने का प्रयास किया गया है इन्होने भारतीय ज्ञान परम्परा के माध्यम से समाज में जीवन यापन कर रहे सभी जाति धर्म के लोगों का जीवन सुधारने का प्रयास किया गया है चाहे व ग्रामीण परिवेश में जीवन यापन करे या आधुनिक परिवेश में, इन्होने दोनों ओर अपनी ज्ञान परम्पराओं में एक सामंजस्य बैठाने का प्रयास किया है। नई कहानी आंदोलन के प्रमुख स्तम्भ कमलेश्वर की कहानियों में अंतनिर्हित निहित भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयामों का अन्वेशन करता है। आमतौर पर कमलेश्वर को महानगरी बोध, अकेलेपन और विस्थापन का लेखक माना जाता है किंतु सूक्ष्म विश्लेषण करने पर उनकी कहानियों में भारतीय दर्शन के शाश्वत सत्य, लोक-अनुभव और नैतिक मूल्यों की उपस्थिति स्पष्ट दिखाई देती हैं।

प्रस्तावना : कमलेश्वर की कहानियाँ केवल आधुनिकता और महानगरीय बसेध की कहानियाँ नही है बल्कि वे अपनी जड़ों में भारतीय ज्ञान परम्परा के उस प्रवाह को समेटे हुए है जो परिवर्तन और निंरतरता के बीच संतुलन बनाती है भारतीय ज्ञान परम्परा का अर्थ केवल शास्त्रों का ज्ञान नही बल्कि वह जीवन दृष्टि है जो मनुष्य को समाज से जोडती है और उसे संवेदनशीलता प्रदान करती है उनकी कहानियों में लोक कथाओं का प्रयोग सहज शिल्प नही है। यह भारतीय ज्ञान की उस मौखिक परम्परा का हिस्सा है जहाँ अतीत की कहानियाँ वर्तमान के संकटो को समझाने का माध्यम बनाती है और ये दिखाते है कि भारतीय मानव कैसे मिथ्या और यथार्थ को एक साथ जीते है भारतीय ज्ञान परम्परा धर्म, कर्तव्य न्याय पर आधारित रही है कमलेश्वर की कहानियाँ आधुनिक युग की विसंगतियों के बीच खोई हुई मनुष्यता और नैतिक मूल्यों की तलाश करती है वे बाजार वाद के खिलाफ भारतीय जीवन की सादगी और संवेदना को स्वर देती है। भारतीय दर्शन में समय को चक्र की तरह देखा गया है कमलेश्वर की कहानियों में समय की गतिशीलता और नियति के साथ मनुष्य का संघर्ष एक गति-शीलता के आधार पर दिखाई देता है जिसमें भारतीय दार्शनिक चिंतन की गहराई को प्रकट करता हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध परम्पराओं में से एक है जिनकी जड़े वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, लोक संस्कृति और सामाजिक आचार विचार में गहराई से निहित है यह परम्परा केवल आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नही हैं बल्कि इमें जीवन मूल्य नैतिकता सहअस्तित्व मानवता और समन्वय की भावना समाहित है भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल उद्देश्य व्यक्ति और समाज के संतुलन का विकास के साथ-साथ लोकमंगल की स्थापना रहा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य अनेक लेखकों ने भारतीय ज्ञान परम्परा को नए संदर्भो में प्रस्तुत किया है। नई कहानी आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षर कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में सामाजिक यथार्थ मानवीय संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति किया है उनकी कहानियों मे परम्परा और आधुनिकता के द्न्द, नैतिक मूल्यों का परिवर्तन तथा सामाजिक चेतना का विकास स्पष्ट रुप से दिखाई देता है उन्होने अपनी रचनाओं में भारतीय ज्ञान परम्परा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप में विधमान है वे लोक जीवन परिवारिक संरचना, सामाजिक संबंधों तथा मानवीय आचरण के माध्यम से भारतीय चिंतन की निरंनतरता को दर्शाने का प्रयास किया है प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा के स्वरुप, उसके प्रभाव और उसके समकालीन संदर्भो का विश्लेषण करना है ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि आधुनिक कथा साहित्य के सम्राट कमलेश्वर जी ने अपनी कहानियों के आधार पर केवल वह मानव की आलोचना ही नही कि बल्कि उन्होने भारतीय ज्ञान परम्परा के आधार पर समाज को एक साथ रहने के लिए भी प्रेरित किया उनकी कहानियों के माध्यम से वह आधुनिक कथा साहित्य में भारतीय ज्ञान परम्परा किस प्रकार जीवंत और प्रांसगिक बनी हुई है इसका भी सम्पूर्ण विवरण अपनी कहानियों के माध्यम से कराकर समाज को एकरुपता में बांधने का प्रयास किया हैं।

इस प्रकार यह शोध भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के अंर्तसंबंधो को समझाने का एक प्रयास है जो कमलेश्वर अपनी कहानियों के माध्यम से सांस्कृतिक निरन्तरता और परिवर्तन दोनों को

उद्घाटित करता हैं।

उद्देश्य :

- भारतीय ज्ञान परम्परा सत्य, अहिंसा, करुणा, सह अस्तित्व और कर्तव्य जैसे मूल्यों को दिखाना।
- कहानियों में आधुनिक जीवन के बीच संघर्षो और सामंजस्य का एक विस्तृत रुप को दोष मुक्त करना।
- वैश्वीकरण और पश्चिमी प्रभाव के बीच लोक**,** जीवन**,** पारिवारिक संघर्षो और सामाजिक मूल्यों के माध्यम से भारतीय सांस्कृति मे को स्पष्ट रुप से जीवत परिवर्तन लाना।
- भारतीय ज्ञान परम्परा "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को व्यापक मानवतावादी दृष्टि में अपनी पहचान बनाना।
- मध्यवर्गीय संवेदना और आदर्श मे संतुलन, आधुनिक परिवेश में चुनौतियों के संतुलन को दिखाना।
- सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव भारतीय उपमहाद्वीप प्राचीन सम्भताओं, कलाओं और भाषाओं को दिखाना।

कार्य विधि : कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा के माध्यम से सामाजिक और यर्थाथवादी दृष्टिकोण पर आधारित है जिसमें उन्होने आम आदमी के जीवन के विभिन्न जटिलताओं को दर्शाया हैं।

विष्लेषण विधि :

- सांस्कृतिक चित्रण
- दार्शनिक विश्लेषण
- तुलनात्मक विश्लेषण विधि
- मनोवैज्ञानिक गहराई
- ज्ञान परम्परा का समाज शास्त्रीय रूप
- आत्मबोध व प्रतिरोध

भारतीय ज्ञान परम्परा को चित्रण- सांस्कृतिक यथार्थ, सांस्कृतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं के माध्यम से अधिक ज्ञान परम्परा का चित्रण दिखाई देता है उनका साहित्य भारतीय जीवन दर्शन नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना का जीवंत दस्तावेज है जिसमें वेद, उपनिष्द, गीता, पुराण लोक कथाऐं, संत साहित्य तथा लोक जीवन के अनुभव शामिल है जिसमें धर्म और मानवता होने के साथ समाज के विघटन, शहरीकरण, और मूल्य संकट को दिखातें है भारतीय ज्ञान परम्परा केवल धार्मिक, अनुष्ठानो तक सीमित नही बल्कि मानवता और नैतिकता का आधार है इनके पात्र अक्सर नैतिक द्वंद से गुजरते है जिसमें धर्म का वास्तविक अर्थ कर्तव्य और सत्य उभरकर आता हैं।

उनकी रचनाओं में भारतीय लोक सांस्कृति, रीति -रिवाज, पारिवारिक संबंध और परम्पराएँ सजीव रूप दिखाने के अलावा ग्रामीण और कस्बाई जीवन के माध्यम सें भारतीय ज्ञान परम्परा की जडों को प्रस्तुत किया गया है वे परम्परा और आधुनिक टकराव को भी दिखते है जिसमें जाति, वर्ग, धर्म से ऊपर उठकर मानवता को महत्व दिया गया है विभाजन और सामाजिक तनाव के प्रसंगो में भी वे साहिष्णुता और करुणा का संदेश देते हैं। इनकी कहानियों में नारी को शक्ति और मातृत्व का प्रतीक माना गया है नारी पात्र संघर्ष शील संवेदनशील और आत्मसम्मान सें युक्त दिखाई देते हैं। वे पारम्परिक बंधनों को आधुनिक सामाजिक यथार्थ सें जोड़ते हैं।

कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा का चित्रण प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनो रूपों में मिलता है वे परम्परागत मूल्यो को आधुनिक संदर्भ में परखते है और उन्हे जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ते हैं।

स्वतंत्र आंदोलन में भारतीय ज्ञान परम्परा : कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय सामाज इतिहास और सांस्कृतिक चेतना का गहरा संबंध दिखाई देता है यदि आप स्वतंत्र आंदोलन की दृष्टि भूमि सामाजिक परिवर्तन भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल तत्व जैसे सत्य, अहिंसा, त्याग, लोकमंगल और मानवता का प्रमाण दिखाई देता है उनकी कहानियों मृगजल, राजा निरबेसिया में भारतीय लोक कलाओं का ढांचा और ग्रामीण जीवन की समझ

दिखाई देती है यह वह ज्ञान है जो पीढी दर पीढी मौखिक परम्परा सें चलता आ रहा है, साझा संस्कृति गंगा-जमुना तहजीब को ज्ञान परंपरा का हिस्सा मानव थे उनकी कहानियों में साप्रंदायिक भावना निहित है।

उनकी रचनाओं में स्वतंत्रता आंदोलन केवल एक घटना नही, बल्कि एक चेतना है। वे दिखाते है कि कैसे आंदोलन को आम आदमी के भारतीय स्वयं की पहचान पैदा की कितने पाकिस्तान का परिप्रेक्ष्य उनके कालजयी उपन्यास में विभाजन की त्रासदी के माध्यम सें सवाल उठाऐं कि आजादी की लडाई के वे मूल्य कहा गया उन्होने ज्ञान परम्परा केउन हिस्सो की आलोचना की जिसमें विभाजन को जन्म दिया और उस हिस्से के अहिसा और एकता को सराहा जो स्वतंत्रता का आधार था। आम आदमी का संघर्ष स्वतंत्रता आंदोलनका असली ज्ञान यह था कि शक्ति जनता में निहित है। कमलेश्वर नें अपनी कहानियों में शोषित और मध्यम वर्ग के संघर्ष को स्वर देकर इसी लोकतांत्रिक चेतना को पुष्टि किया।

कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा एक जीवन शक्ति है जो मनुष्य को उसकी जडों सें जोडती है जबकी स्वतंत्रता आंदोलन जिसें ज्ञान को आधुनिक भारत की जरूरतो के अनुसार ढालने का मौका दिया उन्होने सिध्द किया कि असली ज्ञान वह जो मनुष्य को बंधनो से मुक्त करती हैं।

आधुनिक भारतीय ज्ञान परम्परा : कमलेश्वर की कहानियों में आधुनिक भारतीय ज्ञान परम्परा का स्वरुप स्पष्ट रूप सें दिखाई देता है वे परम्परा और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करते है और बदलतें सामाजिक परिवर्तन में परिवेश में भारतीय मूल्यों की पुनःव्याख्या करते है आधुनिक भारतीय ज्ञान परम्परा का तात्पर्य विचारधारा सें है जिसमें भारतीय सांस्कृतिक मूल्यो जैसें मानवता नैतिकता, करूणा, सह अस्तित्व को आधुनिक जीवन की समस्याओं के संदर्भ में देखा और समझा जाता है यह परम्परा स्थिर नही बल्कि समस्यानुसार परिवर्तित होने वाली चेतना है। जिसमें आाम आदमी की पीड़ा और संघर्ष और अकेलापन प्रमुख विषय है वे आधुनिक जीवन की जटिलताओं के बीच मानवीय संवेदना को ज्ञान का आधार मानते है यह भारतीय ज्ञान को आधुनिक रूपों में व्यक्त करतें है उनकी कहानियों में बदलतें समय के साथ मानव भी अपनी रूपों को आधुनिकता की जाल में बदलता जा रहा है और उसके सम्पूर्ण समय के चक्र में फसता चला जा रहा है और अपनें आप को आधुनिक कहने के साथ भारतीय ज्ञान परम्परा को भूलता चला जा रहा है इस आधुनिक भारतीय ज्ञान परम्परा बेरोजगारी, पारिवारिक विघटन, नैतिक पतन को उजागर करती है आधुनिक ज्ञान परम्परा सामाजिक चेतना के रूप में प्रकट करती है जो व्यक्ति को अन्याय के विरुध्द सोचने और बदलाव की ओर प्रेरित करती है कमलेश्वर आधुनिक जीवन में परम्परागत कई बार टुटते है परंतु पूरी तरह समाप्त नही होते है, वे नई परिस्थितियों नए अर्थ ग्रहण करतें है इस प्रकार वे परम्परा को रूढी नही बल्कि गतिशील ज्ञान के रूप में प्रस्तुत करते है उनकी कहानियों मे पात्र आत्मसम्मान और नैतिक संघर्ष से जूझते दिखाई देते है आधुनिक भारतीय ज्ञान परम्परा यहाँ व्यक्ति की आंतरिक चेतना और नैतिक निर्णय क्षमता के रूप में सामने आती है। वे सता व्यवस्था और सामाजिक संरचनाओं की आलोचना करते है आधुनिक ज्ञान परम्परा उनके यहाँ स्वतंत्र चिंतन और तर्कशीलता के रूप दिखाई देती हैं। आधुनिक ज्ञान परम्परा और आधुनिक के संतुलन का सशक्त उदाहरण है वे यह संदेश देते है कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल अतीत की धरोहर नही बल्कि वर्तमान और भविष्य को दिशा देने वाली जीवंत चेतना है कथा साहित्य में मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय और नैतिकता जागरूकता का समन्वय आधुनिक भारतीय ज्ञान परम्परा की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता हैं।

संघर्षशील भारतीय ज्ञान परम्परा : कमलेश्वर की कहानियों संघर्ष शील भारतीय ज्ञान परम्परा केवल सामाजिक या आर्थिक नही बल्कि भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों धर्म नैतिका न्याय, करूणा और आत्म चेतना का जीवंत रूप है उनके कथा सार में संसार में आधुनिक जीवन की विसंगतियों के बीच परम्परागत ज्ञान और मानवीय मूल्यों का संघर्ष तथा पुनः स्थापना स्पष्ट दिखाई देता हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा सत्य, अहिंसा, सह - अस्तित्व कर्तव्यबोध और लोक मंगल पर आधारित है इसमें संघर्ष कसे नकारात्मक नही बल्कि आत्म विकास

और समाज - परिवर्तन का माध्यम माना गया है। इन्होने वर्ग विभाजन, गरीबी, शोषण, और असमानता के विरुद्ध खडे होने की चेतना है जो भारतीय ज्ञान परम्परा के धर्म और न्याय सिद्धांत से जुडता है। उनके पात्र अक्सर सही गलत परम्परा-आधुनिकता और संघर्ष कर्तव्य के बीच उलझे रहता है यह आत्म संघर्ष उपनिषदो की आत्म चेतना की परम्परा की याद दिलाता है आधुनिक भौतिकवादी समाज में मानवीय मूल्यों का क्षरण दिखाई देता है कमलेश्वर इन विघटन के बीच भारतीय संस्कृति के मूल तत्व करूणा सहिष्णुता और सामूहिकता को पुनः स्थापित करने का प्रयास करते है।

कमलेश्वर की दृष्टि मानवतावादी है वे संघर्ष को हिंसा नही बल्कि चेतना का परिवर्तन की प्रक्रिया मानते है यह दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान परम्परा की भावना से जुडा होता है इनके पात्र सामाजिक नैतिक और सामाजिक ज्ञान के आधार पर अपने आप को जोडते है इनके आधार पर मानव के समस्त धर्म वर्ग सामाजिक आर्थिक व व्यक्तिगत भावनाओं के माध्यम से ही आपस में संघर्ष कर रहे है उनके पात्र में ग्रामीण परिवेश व आधुनिक परिवेश में संघर्ष ही दिखाई देता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ टकराव : कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ टकराव का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है वे परम्परा के आधुनिकता के बीच उभरते वैचारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक द्वदं को यथार्थवादी ढंग से व्यक्त किया है। भारतीय ज्ञान परम्परा धर्म, संस्कार पारिवारिक मूल्य, कर्म सिद्धांत का सामना आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से तर्कवाद और व्यक्तित्वाद होता है नई पीढी पुराने विश्वासों पर प्रश्न उठाती है अंधविश्वास और रुढिया पर आलोचनात्मक दृष्टि मिलती है भारतीय ज्ञान परम्परा मे वर्ग व्यवस्था पितृसत्ता और सामूहिकता का प्रभाव रहा है कमलेश्वर इन संरचनाओं के भीतर छिपे असमानताओं को उजागर करते है नारी पात्र परम्पराओं बंधनो को चुनौती देते है निम्न वर्गीय सामाजिक न्याय की मांग भी करते है तथा परम्परागत नैतिकता और आधुनिकता जीवन की व्यावहारिक संघर्ष दिखाई देते है।

पात्र अपने संस्कारो और वर्तमान परिस्थितियों के बीच उलझे रहते है तथा आदर्श और यथार्थ के बीच द्वदं प्रमुख कथावस्तु का विस्तृत रूपांतरण करते है। स्वतंत्रता के बदलते सामाजिक, राजनैतिक परिदृश्य में परम्परागत ज्ञान की प्रासंगिकता पर केवल अतीत पर आधारित सोच वर्तमान समस्याओं का समाधान नही दे सकती भारतीय ज्ञान परम्परा को नए संदर्भो में पुनः स्थापित किया जाता है। भारतीय ज्ञान परम्परा क अंधानुकरण नही बल्कि उसका आलोचनात्मक पुर्न मूल्यांकन मिलता है परम्परा और आधुनिकता के बीच टकराव समाज परिवर्तन की नई सोच देता है।

विभिन्न स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा : कमलेश्वर हिन्दी साहित्य के उन स्तम्भो मे से है जिन्होने न केवल आधुनिकता को समझा बल्कि भारतीय समाज की जड़ों मे रची बसी ज्ञान परम्परा और सांस्कृतिक चेतना को भी अपनी कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा का निर्वाह किसी उपदेश की तरह नही हैं। बल्कि जीवन के समस्त ज्ञान को अपने अनुभवों और संवेदनाओं के माध्यम सें बताया है भारतीय ज्ञान परम्परा का एक सबसे बड़ा हिस्सा लोक मानस की गहरी समझ दिखाई दी है वे कस्बाई जीवन के उन नैतिक मूल्यों और लोक विश्वासों को चित्रित करते है जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रुप से हस्तांतरित होने आए है यह ज्ञान किताबी नही बल्कि अनुभवों के माध्यम से उनकी कहानियों मिथक और इतिहास का प्रयोग आधुनिक समस्याओं को सुलझाने के लिए किया गया हैं।

भारतीय दर्शन का मूल तत्व है मानवीय करूणा और सह अस्तित्व कमलेश्वर की कहानियों का विभाजन की विभीषिका, साम्पदायिक और शहरी अलगाववाद के खिलाफ खड़ी होकर मानवीय रिश्तों की वकालत करती है वे उस भारतीय बोध को जगाते है जहाँ व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और मानवता के बारे में सोचता है उनकी कहानियों में न्याय, सत्य और अहिंसा के वे सूक्ष्म रुप मिलते है जो उपनिषदों और वेदों के दर्शन के आधार है भारतीय ज्ञान परम्परा में समय को चक्र माना गया है जो समाज का बदलता स्वरुप दिखाता हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा का व्यंग्यात्मक पहलू : कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा का

व्यंग्यात्मक पहलू अत्यंत प्रभावशाली और चिंतनशील रूप में सामनें आता वे परम्परा का अंधानुकरण नही करते बल्कि उसके रुढ़िवादी जड़ों और पाखंडी रूपो पर तीखा व्यंग्य करते है उनका व्यंग्य समाज को जागरूक करने का माध्यम बनता है। भारतीय ज्ञान परम्परा जो मूलतः मानवीय और नैतिक मूल्यो पर आधारित थी समय के साथ रुढ़ियो में बदल गई उनकी कहानियों में ऐसे पात्र मिलते है जो धर्म के नाम पर सामाजिक अन्याय को सही ठहरातें है वे धर्म के बाहरी आडंबर और पाखंड पर कटाक्ष करते है नई कहानियों मे धार्मिक कर्मकांडो के पीछे स्वार्थ और दिखावे को उजागर किया गया है यहाँ व्यंग्य का उद्देश्य धर्म का विरोध नही, बल्कि उसके विस्तृत रूप आलोचना है भारतीय ज्ञान परम्परा समानता और करूणा की शिक्षा देती है परन्तु व्यवहार में जाति, वर्ग और लिंग के आधार पर भेदभाव दिखाई देता है कमलेश्वर इस विरोधाभास को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करतें है जिसमें पाठक सोचने को विवश होता हैं।

उनकी कहानियों में आधुनिक जीवन और पारंपरिक मान्यताओं के टकराव को भी व्यंग के माध्यम सें दर्शाया गया है वे दिखाते है कि जब परम्परा अपनें मूल मानवीय स्वरुप सें हट जाती है तब वह प्रगति में बाधा बनती हैं मानवीय संवेदना से जुड़ा रहता है वे समस्या समाधान भी संकेतिक करते है जिससें विवेक और तर्कशील को अपनाने की प्रेरणा देते है।

ज्ञान परम्परा और मानवीय मूल्य : कमलेश्वर हिन्दी कथा साहित्य के प्रमुख कथाकार है उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदना का अस्तित्व मिलता है उनके कहानियों मे ज्ञान परम्परा और मानवीय मूल्य ग्रामीण व शहरी दोनो कथाओं में मिलता हैं। वे विशेष रूप से निम्न मध्यवर्गीय शोषित वर्ग और संघर्षरत व्यक्ति के माध्यम से आत्म सम्मान के मूल्य को स्थापित करते है इनके पात्र आर्थिक तंगी, सामाजिक अन्याय और पारिवारिक दबावों के बावजूद भी नही खोते हैं। इनकी कहानियों मे पात्र अन्याय के सामने झुकते नही चाहे व्यवस्था भ्रष्ट हो या समाज संवेदनशील पात्र अपनें स्वाभिमान की रक्षा स्वयं करते हैं। इस संघर्ष के माध्यम से लेखक आत्म सम्मान को नैतिक शक्ति के रूप मे प्रस्तुत करता हैं।

कमलेश्वर की कहानियों में स्त्री पात्र पारंपरिक बंधनों के बावजूद आत्म निर्णय का साहस दिखाती है वे अपमानजनक परिथितियों को स्वीकार नही करती इससे स्पष्ट होता है कि लेखक स्त्री स्वाभिमान को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानते है गरीबी के अभाव मे वे आत्म सम्मान से अलग नही होते उनकी मदद लेने के लिए अपनी मेहनत व ईमानदारी को प्राथमिकता देते है यह संदेश मिलता है कि आत्म सम्मान धन से अधिक मूल्यवान हैं।

आत्म सम्मान का मूल्य : कमलेश्वर नई कहानी आंदोलन के उन स्तंभो मे से है जिन्होने मनुष्य की बाहरी परिस्थितियों के साथ - साथ उसके भीतर के द्न्द और आत्मसम्मान को बड़ी सूक्ष्मता से उकेरा है उनकी कहानियों में आत्मसम्मान कोई छोटी आदर्शवादी धारणा नही है बल्कि एक कड़वा संघर्ष है जो अक्सर गरीबी महानगरीय दबाव और बदलती सामाजिक मान्यताओं के बीच घिरा जाता है उदाहरण कस्बे का आदमी या खोई हुई दिशाएँ इन कहानियों मे नायक अपनी आर्थिक तंगी को छिपाने की कोशिश नही करता लेकिन वह अपनी गरिमा को गिरवी रखने को भी तैयार नही है उनके पात्रो के लिए आत्म-सम्मान ही वह अंतिम संपत्ति है जो उन्हे पूरी तरह टूटने से बचाती है। शहर की भीड़ मे व्यक्ति अपनी पहचान खोने लगता है कमलेश्वर ने दिखाया कि कैसे एक व्यक्ति उस भीड़ का हिस्सा होकर भी अपने स्वसम्मान को बचाने की कोशिश करता है उदाहरण दिल्ली मे एक मौत इस कहानी में संवेदनाओं के मर जाने और व्यक्तियों के बीच आत्मसम्मान की कमी या उसका प्रदर्शन समाज की संवेदनशीलता को दर्शाती है। कमलेश्वर की कहानियों में आत्मसम्मान का मूल्य केवल व्यक्तिगत गुण नही बल्कि एक सामाजिक प्रतिरोध है उनके पात्र गरीबी में घुट सकते है, भीड़ में खो सकते है लेकिन वे उस भीतरी मनुष्य को जीवित रखते हैं।

ज्ञान व परम्परा की नैतिकता : कमलेश्वर परम्परा को दो दृष्टिकोण से देखते है एक वह जो मनुष्य को जड़ बनाती है और दूसरी वह जो उसे रिश्तो से जोड़ती है, टूटती हुई नैतिकता राजा निरबेंसिया में परम्परा और नैतिकता

का सबसे क्रूर चेहरा दिखता है जगपति और चंदा की कहानी यह बताती है कि समाज की तथाकथित नैतिकता और शुद्धता का ज्ञान अंतत एक हंसते खेलते परिवार की बलि ले लेता है यहाँ परम्परा एक दमघोटू मर्यादा के रूप में चित्रित है परम्परा का खोखलापन कमलेश्वर दिखाते है कि कैसे पुरानी नैतिकताऐं नए समय की आर्थिक और सामाजिक सच्चाईयों का सामना कर रही है मास का दरिया जैसी कहानियों में भूख और बेबसी के आगे नैतिकता के पुराने मापदंड गौण हो जाते है कहानियों में ज्ञान किताबी नई बल्कि जीवन के कडवे अनुभवों से उपजा है वे मध्यवर्गीय समाज की उन परतो को खोलते है जहाँ इंसान भीड़ में भी अकेला है। शहरीकरण का ज्ञान खोई हुए दिशाऐं जैसी कहानियों में दिल्ली जैसे महानगरों का ज्ञान का अर्थ है -शहर की अजनबीयत और यांत्रिकता को पहचानना नायक चंदूर यह जान लेता है कि रिश्तो की गर्माहट अब सिर्फ एक भय है।

कमलेश्वर की कहानियों हमें यह सिखाती है कि परम्परा की वह नैतिकता जो मनुष्य को मनुष्य न रहने दे वह त्याज्य है उनका ज्ञान हमें सीखाता है कि समय के साथ नैतिकता के मानक बदलने चाहिए। वे परम्परा के विरोधी नही बल्कि उसके रुढिवादी रूप के आलोचक है। परम्परा जब तक जीवन को गति देती है वह मूल्यवान है जब वह जीवन को रोकने लगती है तो वह बंधन बन जाती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में संवेदन शीलता और मानवताः- नई कहानी आंदोलन के आगे रहे कमलेश्वर आधुनिकता हिंदी साहित्य के उन विरल साहित्यकारों में से है जिन्होने समाज के बदलते स्वरूप को केवल देखा नही बल्कि उसे जीवा है उनकी कहानियों में संवेदनशीलता और मानवता कोई बाहरी तत्व नही, बल्कि उनकी कहानियों की आत्मा है कमलेश्वर की कहानियों का नायक कोई अतिमानव या राजकुमार नही है उनके पात्र बस स्टैण्ड, रेलवे स्टैण्ड, दफतरों और तंग गलियों में रहने वाले मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय इंसान है। वे उन लोगों की पीड़ा को स्वर देते है खोई हुए दिशाऐं जैसी कहानियों में कमलेश्वर ने दिखाया है कि कैसे आधुनिकता और महानगरों की भीड में मनुष्य अकेला पड़ता जा रहा है। अकेलापन भीड़ के बीच भी इंसान खुद को कटा हुआ महसूस करता है पहचान का संकट व्यक्ति अपनी जड़ों को काटकर एक मशीन जीवन जीने को मजबूर करता है उनकी संवेदनशीलता यहाँ एक बात में दिखाती है कि वे उस भीड़ में खोई हुए व्यक्ति के आंतरिक दर्द को बड़ी बारिकी से पकड़ते हैं।

कमलेश्वर की कहानियों में मानवता का सबसे प्रखर रूप उनके देश विभाजन और साम्प्रादयिकता से जुडे अनुभवों में दिखता है कितने पाकिस्तान और उनकी नई कहानियों में यह झलकता है कि राजनीति इंसानों के बीच दीवारें खड़ी करता है लेकिन मानवता धर्मो से ऊपर है वे उसे नफरत के खिलाफ खड़े होते है जो एक इंसान को दूसरे इंसान का दुश्मन बना देती है। उन्होने महलो की कहानियाँ लिखी जहाँ आज भी इंसान अपनी सादगी और संघर्षो के साथ जिंदा है।

पारिवारिक व सामाजिक उत्तर दायित्वः- कमलेश्वर की कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नही है बल्कि वे आधूनिक समाज और बिखरते हुए मध्यमवर्गीय परिवारों का एक जीवन दस्तावेज है उनकी कहानियों में सामाजिक और पारिवारिक उत्तरदायित्व के द्न्द को बहुत गहराई से चित्रित किया गया है। व्यक्ति को समाज से अलग करके नही देखती वे दिखाते है कि एक व्यक्ति का सामाजिक उत्तरदायित्व उसे अक्सर व्यवस्था के खिलाफ खड़ा कर देता हैं। उनकी कहानियों मे समाज की सड़न और भष्टाचार को दिखाया गया है सामाजिक और राजनैतिक चादुकारिता पर कड़ा प्रहार करते है जो यह याद दिलाता है कि एक नागरिक का दायित्व आत्म सम्मान की रक्षा करना हैं। समाज के प्रति ये लेखक या बुद्धिजीवी का उत्तर दायित्व उसे यथार्थ बोलने के लिए मजबूर करता है चाहे वह कितना भी कड़वा क्यों ना हो। उनकी कहानियों मे पिता अक्सर एक दहती हूई पुरानी व्यवस्था का प्रतीक है और बेटा उस नई जिम्मेदारी के बोझ तले दबा है जिसे वह चाहकर भी नही छोड सकता।

कमलेश्वर की कहानियों में हमे यह सीखाती है कि उत्तरदायित्व कोई बोझ नही, बल्कि मानवीय संवेदनाऐं का आधार है हालांकि वे यह भी चेतावनी देते है कि जब सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ ही

भसीन बन जाती हैं।

ज्ञान में प्रेम विश्वास व निष्टाः- कमलेश्वर का कथा संसार उस दौर में विकसित हुआ जब समाज पारेपरिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच संघर्ष कर रहा था। उनकी कहानियों में प्रेम का स्वरुप राजा निरबेसिया से लेकर खोई हुए दिशाऐं तक अलग-अलग रंगों में दिखाई देता हैं। कमलेश्वर के यहाँ प्रेम कोई काल्पनिक या परिकथा जैसी भावना नही है। उनके लिए प्रेम आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होने वाला तत्व है उनकी प्रसिद्ध कहानी राजा निरबेसिया से जगपति और चंदा का प्रेम गहरा है लेकिन आर्थिक तंगी और संतान की लालसा उनके बीच एक ऐसी खाई पैदा कर देती है यहाँ प्रेम होने के बावजूद जीवन बिखर जाता है जहाँ प्रेम की कोमलता पर सामाजिक दबाव भारी पड़ता हैं।

कमलेश्वर की कहानियों में प्रेम, विष्वास और निष्टा कोई स्थायी या स्थिर भाव नही है वे परिस्थितियों के साथ बदलते और संघर्ष करते दिखाई देते है वे यह संदेश देते है कि प्रेम केवल हद्य का मामला नही है, बल्कि यह समाज अर्थ और मर्यादाओं के जटिल ताने बाने में फॅसा हुआ एक मानवीय अनुभव हैं।

भाषा-शैली का प्रयोगः- कमलेश्वर नई कहानी आंदोलन के प्रमुख स्तम्भ रहे है उनकी कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा की भाषा-शैली का समावेश बहुत ही सूक्ष्म और जीवन सापेक्ष तरीके से हुआ है वे पारंपरिक पांडित्य के बजाय लोक जीवन और आधुनिक संवेदना के माध्यम से इस परम्परा को पुनःजीवित करते हैं।

कमलेश्वर की भाषा में भारतीय ज्ञान परम्परा केवल वेदो या उपनिषदों के उद्वरणों तक सीमित नही है बल्कि वह जनश्रृतियों और मिथकों के जरिये आती है वे जानते है कि भारतीय समाज में ज्ञान किताबी कम और श्रृति अधिक है। शैली उनकी कहानियों में मुहावरों और लोकोक्तियाँ का प्रयोग भारतीय समाज की पांरपरिक बुद्धिमता को दर्शाता है उदाहरण राजा निरबेसिया जैसी कहानियों में वे लोककथा के ढ़ाचे का उपयोग करके आधुनिक विसंगतियों पर चोट करते हैं। कमलेश्वर की भाषा-शैली भारतीय ज्ञान परम्परा को बोझिल नही बनाती बल्कि उसे मानवीय संवेदना का जामा पहनाती है वे प्राचीन मूल्यों को आधुनिक महानगरीय जीवन की विसंगतियों के बीच तलाशते है जिससे उनकी भाषा में गहरा सांस्कृतिक विमर्श पैदा होता हैं।

कमलेश्वर की कहानियों पर आधारित टी.वी पर दिखाऐ जाने वाले : कमलेश्वर की कहानियों पर आधारित टी.वी. धारावाहिकों या चलचित्रों की बात करते है तो कुछ प्रमुख उदाहरण सामने आते है जो भारतीय मध्यम वर्ग की संवेदना को बखूबी दर्शाते हैं -

1. दर्पण : दूरदर्शन के स्वर्णिम युग में प्रसारित यह धारावाहिक बेहद लोकप्रिय था।
   i. आधार यह कमलेश्वर द्वारा चुनी गई और उनके द्वारा ही रूपांतरित विभिन्न प्रसिद्ध लेखको की कहानियों पर आधारित था।
   ii. ज्ञान परम्परा का जुडाव इसमें भारतीय समाज के नैतिक द्न्दो मानवीय रिश्तो की जटिलता औश्र सत्य की तलाश को दिखाया गया।
2. चंपकांता : यह देवकी नंदन, स्त्री के उपन्यास पर आधारित था लेकिन इसके शुरुआती दौर में कमलेश्वर ने इसकी पटकथा और संवादो पर काम किया था।
3. सारा आकाश और अन्य कृतियों - कमलेश्वर की कई फिल्में टी. वी., टेली फिल्मों की पटकथाएँ लिखी जो उनकी अपनी कहानियों के दर्शन से प्रभावित थी।

इसी तरह उनकी विभिन्न प्रकार के कथा संवाद, टी. वी. के अलावा फिल्मों पर भी दिखाये गये जो बहुत प्रसिद्ध था।

निष्कर्ष : कमलेश्वर की कहानियों में भारतीय ज्ञान परम्परा का निष्कर्ष यह कि ज्ञान वही है जो मनुष्य को अधिक संवेदनशील, उदार और न्यायप्रिय बनाए रखता है। परम्परा का अर्थ अतीत में जकड़े रहना नही बल्कि अतीत की रोशनी में भविष्य को गढ़ना है, ज्ञान का अंतिम लक्ष्य लोक कल्याण है सच्ची भारतीयता उस करूणा मे है जो

विभाजनकारी रेखाओं को मिटा देती हैं। कमलेश्वर का साहित्य बताता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा कोई स्थिर वस्तु नही है बल्कि जीवन की गतिशीलता के साथ निरन्तर विकसित होने वाली एक चेतना है!

संदर्भ ग्रंथ :

1. कमलेश्वर **A** राजपाल एंड सन्स **A** भारतीय दर्शन **A** पृष्ठ संख्या 1 **–** 50.
2. कमलेश्वर **A** राधाकृष्ण प्रकाशन **A** हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास **A** पृष्ठ क्रमांक 275 **–** 290**.**
3. कमलेश्वर **A** लोक भारतीय प्रकाशन **A** हिन्दी कहानी का विकास **A** पृष्ठ क्रमांक 210 **–** 255**.**
4. कमलेश्वर **A** राजकमल प्रकाशन **A** हिन्दी कहानी का विकास **A** पृष्ठ संख्या 150 **–** 165**.**
5. कमलेश्वर **A** राजकमल प्रकाशन **A** कितने पाकिस्तान **A** पृष्ठ क्रमांक 45 **–** 120.
6. कमलेश्वर **A** राजकमल प्रकाशन **A** राजा निरबेसिया **A** पृष्ठ क्रमांक 170 - 180.
7. कमलेश्वर **A** राजकमल प्रकाशन **A** खोई हुई दिशाऐं **A** पृष्ठ क्रमांक 12 - 15
8. कमलेश्वर **A** राजपाल प्रकाशन **A** राजा निरबेसिया **A** पृष्ठ संख्या 5 **–** 9**.**
9. कमलेश्वर **A** नेशनल पब्लिशिंग हाउस **A** भारतीय कहानी परम्परा **A** पृष्ठ क्रमांक 2 **–** 4**.**

•